2

लाईट कैमरा एक्शन

रेखा शाह आरबी

आजकल सर्दी का आलम यह है कि बाहर निकलो तो हाथ पैर सुन्न और घर में आलसी मगरमच्छ के जैसे चुपचाप पड़े रहो तो कामकाज जीरो या निल बटे सन्नाटा। ऊपर से भगवान द्वारा गलन भरे ब्रह्मास्त्र तीर जो छोड़े जा रहे है सीधे हड्डियों का लक्ष्य भेदन करके ही आ रहे है। और सूर्यदेव तो लगता है मकर संक्रांति तक की छुट्टी पर चले गए हैं ।अब कुछ दिन पंतग -वतंग उडाऐगें कुछ के पंतग काटकर ही वह वापस ऑफिस पर आयेगे । जब सूरज देव का आफिस ही बंद है तो भूमंडल के कामकाज में गड़बड़झाला तो होना ही है। लेकिन इस ठंडी के बारे में वह लोग सोचे जिसके पास इस ठंडी से बचने का इंतजाम नहीं है। मेरे पास तो गर्म कपड़ों का भरा पूरा नया नवेला कलेक्शन है । अतः मुझे इस ठंडी के मौसम से कोई फर्क नहीं पड़ता न फर्क पड़ने वाला है । जब तक मन हो तब तक सूर्यदेव खुशी खुशी छुट्टी मनाऐ ।

मेरे पास तो अब इतने ज्यादा गर्म कपड़े हो चुके हैं कि मैं तो इनका फुटपाथ पर रेहड़ी लगाकर बेचने का धंधा खोलने का सोच रही हूं। ताकि कुछ नगदी नारायण का बैठे ठाले मौसम में इंतजाम हो जाए ।देखिए आप यह न सोचिए कि मैं इस धंधे में परमानेंट उतरने वाली हूं बस पार्ट टाइम के लिए उतरना चाहती हूं। मेरे पास भी समस्या है आखिर मैं क्या करूं .. मेरे पास इतने ज्यादा गर्म कपड़े शाल, स्वेटर-मफलर ,मोजे हो चुके हैं कि मेरे पास इनको रखने की समस्या है। और मैं इनसे छुटकारा चाहती हूं फेक भी नहीं सकती क्योंकि बिल्कुल नए नवेले हैं । अब आप कहेंगे कि क्यो नहीं गरीबों को दान कर देती नहीं लेकिन आपको बता दूं यह जहां से मुझको मिले हैं । वह खुद दुखियारे थे वह जनता का दुख नहीं अपना दुख दूर करने के लिए बांटना चाहते थे। मैंने उनसे कपड़े लेकर उनका दुख दूर किया परोपकार करना अच्छी बात है।

भगवान भला करे इन गर्म कपड़े बांटने वालों का कि अब मेरे पास दुकान खोलने लायक कपड़े जमा हो चुके हैं। अब आप सोचेंगे मैं किसी को लेने से मना क्यों नहीं करती.. लेकिन मैं मना करती हूं मैंने बहुत बार मना किया लेकिन कितनों को मना करूं और किन-किन को मना करू वह लोग मेरे पैर पकड़ कर गिर गिरगिडाने लगते हैं " बहन ले लो बहन ले लो" इस सर्दी में बांटने वालों की संख्या इतनी ज्यादा है कि मैं चाह कर भी हर एक को मना नहीं कर सकती आखिरकार मुझे दया आ जाती है । आखिर उनकी भी रोजी-रोटी का सवाल है । जो मुझे बांटने आते हैं कपड़े -लते उनमें अधिकतर नए-नए राजनीति में जगह बनाने की इच्छा रखे हुए हुए सिपाह-सालार रहते हैं जो अपनी राजनीति को चमकाना चाहते हैं । कुछ वह समाजसेवी रहते हैं जो अपनी समाज सेवा की दुकान चलाना चाहते हैं। और कुछ वह जमे-जमाए नेता रहते हैं जिनकी दुकान में भीड़

 ISSN:2583-8849

कम होने लगती है तो अपना प्रचार प्रसार करने के लिए आते हैं।

और मुझे इन कपड़ों को लेने के एवज में कभी-कभी नगदी नारायण भी मिलता है । अब मेरे मना करने की गुंजाइश कहां रह जाती है। आखिरकार थक हार कर मैं हां कर देती हूं .. उसके बाद शुरू होता है लाइट, कैमरा, एक्शन.. बाकायदा कम से कम एक स्वेटर को दस- दस लोग पकड़ते हैं और मुझे थमाते हैं । अपने चालाक चौपटे पर मासूमियत और मुस्कान का मुखौटा चढ़ाकर मुस्कुरा मुस्कुरा कर फोटोशूट करवाते हैं। वीडियो शूट करवाते हैं और मुझे थोड़ा गरीबों जैसा दीनता हीनता चेहरे पर लाने को कहा जाता है जो कभी कभी आना ही नहीं चाहता है इस चक्कर में टेक पर टेक होते जाते हैं ।कभी-कभी तो यह लोग चलताऊ फोटोग्राफर और सूट करने वाले को पकड़ के ले जाते हैं। जिसके चलते मुझे बार-बार यह प्रक्रिया दोहरानी पड़ती है । काफी थक जाती हु.. इन सबके चलते लेकिन इन सब प्रक्रिया के दौरान मुझे बाकायदा अच्छी तरह स्पेशल पर्सन जैसे ट्रीट किया जाता है। हर पांच मिनट पर मेरे चाय पानी का ख्याल रखा जाता है। मेरे आराम खयाली का ख्याल रखा जाता है । मैं थक ना जाऊं इसका ख्याल रखा जाता है। इनकी भी मजबूरी है आजकल के सारे गरीब लोग होशियार हो चुके हैं वह तभी कोई सामान लेते हैं जब वह कन्फर्म हो जाते हैं कि कोई फोटो नहीं खींची जा रही हैं। इसलिए हम जैसे नक़ली गरीब की डिमांड आ पड़ी है।मैंने तो पूरे ठंड में इसको पार्ट टाइम जॉब बना लिया है । अगर आपको भी ऐसी किसी सेवा की जरूरत पड़े तो निसंकोच मुझसे संपर्क कीजिएगा पता वही है -"जहां कोई आता जाता नहीं अच्छा तो हम चलते हैं"।

सर्दी रे सर्दी

समझ में नहीं आ रहा है इतनी सर्दी का क्या करूं। इस सर्दी का ना ही अचार डाला जा सकता है । और ना ही इसका भजिया बनाकर खाया जा सकता है । ना हीं इसे धूप में सुखाकर स्टोर करके रखा जा सकता है। ताकि गर्मियों में काम में लाया जा सके । और ना ही किसी को उठा कर दिया जा सकता है ऑलरेडी सबके पास भरपूर मात्रा में सर्दी है। ना यह सर्दी जीने दे रही है ना मरने का ऑप्शन दे रही है। ना चैन से कमाने दे रही है ना चैन से खाने दे रही है। हम जैसे मिडिल क्लास वालों के पास पहले ही बहुत ज्यादा ऑप्शन नहीं रहता है। और इस सर्दी में और ज्यादा सारे ऑप्शन खत्म कर दिए है।

ऐसा लग रहा है कि सूर्य भगवान इंसानों से उसकी करतूतो के लिए बदला ले रहे हैं । अब क्या किया जाए हम इंसानों की करतूत ही ऐसी है। सारी प्रकृति कुपित है अगर सूर्य भगवान भी कुपित हो जाए तो कौन सी बड़ी बात है । वरना बिना पैसे खर्च किए इतनी

ISSN:2583-8849

फूल एसी कौन चालू करता है। ऐसा लग रहा है सूर्य देव भी राजनीति कर रहे हैं और हम आम जनता बिना नीति के मारे जा रहे हैं।

भगवान मरना तो हम लोगों को एक दिन है लेकिन बिना किसी नीति के मत मारिए कोई नीति और नियम हो की कतार से हम लोग आए। वरना अभी धरती वाले जनसंख्या से जूझ रहे हैं यही समस्या आपको भी झेलनी पड़ जाएगी । उसके बाद आप कहेंगे कि इन धरती वालों के पास कोई अनुशासन और संस्कार नाम की चीज नहीं है वैसे सच में नहीं है।

सर्दी इतनी है कि नहाने का नाम सुनते ही सर्दी लग जा रही है । पानी को देखते ही पूरा भूमंडल कांपने लग रहा है । एक लोटे पानी में से अगर गलती से दो-चार बूंद भी हाथ पर पानी गिर जा रहा है तो यमराज के पास जाने के सपने आने लग रहे हैं।अगर गलती से कहीं पर यह गाना भी बजते हुए सुन ले रहे हैं की.. धरती नदिया पवन के झोंके.. कोई सरहद ना इन्हें रोक टोके, इस गाने को सुनते ही ठिठुरन और टांगे कांपने लग रही है । सच में आपको कोई रोक-टोक नहीं रहा है आप बिना भव बाधा के आइऐ और अपना स्थान ग्रहण कीजिए भगवान जी .. कुछ विचार कीजिए।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया की रूम हिटर का इस्तेमाल करो । भला तीन-चार डिग्री पर रूम हीटर भी काम करता है । वह भी इस हाडकपाऊ ठंड में कांपने लगता है ।उसको भी ठंड लगने लगती है। लगता है जैसे वह ऊष्मा दे नहीं रहा है बल्कि हम लोगों से ही ऊष्मा ले रहा है। रूम हीटर आखिर इस्तेमाल किया जाए तो कैसे किया जाए । बिजली का बिल पीटी उषा के जैसे दौड़ने लगता है। पूरा शरीर गर्म होने के बजाय बिजली का बिल देखकर दिमाग गरम हो जा रहा है। अगर ठंड भगाने और बिल की प्रतियोगिता की जाए तो बिल ज्यादा तेज भागता हुआ निकलेगा। इसीलिए यह हम मिडिल क्लास वालों के बस की बात नहीं है यह लग्ज़री आइटम है। और ऊपर से यह भी डर लगता है कहीं ठंड भगाते- भगाते बिजली का बिल इतना ना आ जाए की बिजली का बिल चुकाने में घर द्वार ही ना बिक जाए। अब ठंड के चक्कर में कोई बेघर तो होने से रहा।

बस आम जनता के पास एक यही सुविधा थी कि आपकी रोशनी सबको बराबर मात्रा में मिलती थी। यहां पर किसी का कोई गणित नहीं चलता था। पशु पक्षी सबके लिए समानता थी। चाहे कोई अमीर हो या गरीब, कोई बड़ा नेता हो या सड़क पर खड़ा कोई फकीर ,सबको यही चीज एक बराबर मिलती थी। कृपया इससे वंचित मत कीजिए गुहार और पुकार है कि है सूर्य देव दर्शन दीजिए जनता अब आकुल व्याकुल हो चुकी है।

बलिया (यूपी)

ISSN:2583-8849